भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कृत

अन्धेर नगरी

(नाटक)

सम्पादक
डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव
गोरखपुर यूनिवर्सिटी

लोकभारती प्रकाशन
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद-1

Scanned by CamScanner

प्रथम अंक

स्थान—बाह्य प्रान्त

(महन्त जी दो चेलों के साथ गाते हुए आते हैं)

सब : राम भजो राम भजो राम भजो भाई।
राम के भजे से गनिका तर गयी,
राम के भजे से गीध गति पायी।
राम के नाम से काम बनै सब,
राम के भजन बिनु सबहि नसाई।[1]
राम के नाम से दोनों नयन बिनु,
सूरदास भए कबिकुल राई।[2]
राम के नाम से घास जंगल की,
तुलसीदास भय भजि रघुराई।

महन्त : बच्चा नारायणदास, यह नगर तो दूर से बड़ा सुन्दर दिखायी पड़ता है! देख, कुछ भिक्षा-उच्छा मिले तो ठाकुर जी को भोग लगै। और क्या।

---

1. नष्ट होना।
2. विभिन्न कवियों में श्रेष्ठ।

Scanned by CamScanner

नारायणदास : गुरु जी महाराज, नगर तो नारायण के आसरे से बहुत ही सुन्दर है जो है सो, पर भिक्षा सुन्दर मिलै तो बड़ा आनन्द होय।

महन्त : बच्चा गोबरधनदास, तू पश्चिम की ओर से जा और नारायणदास पूरब की ओर जायेगा। देख, जो कुछ सीधा-सामग्री[1] मिले तो श्री शालग्राम जी का बालभोग सिद्ध हो।

गोबरनदास : गुरु जी! मैं बहुत-सी भिक्षा लाता हूँ। यहाँ के लोग तो बड़े मालवर[2] दिखायी पड़ते हैं। आप कुछ चिन्ता मत कीजिये।

महन्त : बहुत लोभ मत करना। देखना, हाँ—

लोभ पाप का मूल है, लोभ मिटावत मान।
लोभ कभी नहिं कीजिये, या मैं नरक निदान।।[3]

(गाते हुए सब जाते हैं)

---

1. खाद्य सामग्री।
2. धनवान।
3. अन्त में।

Scanned by CamScanner

दूसरा अंक

स्थान—बाजार

कबाबवाला : कबाब गरमागरम मसालेदार—चौरासी मसाला बहत्तर आँच का—कबाब गरमागरम मसालेदार—खाय सो होंठ चाटै, न खाय सो जीभ काटै। कबाब लो, कबाब का ढेर—बेचा टके सेर।

घासीराम : चने जोर गरम—

चने बनावै घासी राम।
जिनकी झोली में दूकान।।
चना चुरमुर चुरमुर बोलै।
बाबू खाने को मुँह खोलै।।
चना खावै तौकी,[1] मैना[1]।
बोलैं अच्छा बना चबैना।।
चना खायँ गफूरन[1], मुन्नी[1]।
बोलैं और नहीं कुछ सुन्ना।।
चना खाते सब बंगाली।
जिनकी धोती ढीली–ढाली।।

---

1. काशी की तत्कालीन प्रसिद्ध वेश्याएँ।

Scanned by CamScanner

चना खाते मियाँ जुलाहे।
डाढ़ी हिलती गाह बगाहे।।
चना हाकिम सब जो खाते।
सब पर दूना टिकस लगाते।।
चने जोर गरम—टके सेर।

नारंगीवाली : नारंगी ले नारंगी—सिलहट[1] की नारंगी, बुटवल[2] की नारंगी। रामबाग की नारंगी, आनन्दबाग की नारंगी। भई नीबू से नारंगी। मैं तो पिय के रंग न रँगी। मैं तो भूली लेकर संगी। नारंगी ले नारंगी। कँवला नीबू[3], मीठा नीबू, रंगतरा,[4] संगतरा[5]। दोनों हाथों लो नहीं पीछे हाथ ही मलते रहोगे। नारंगी ले नारंगी। टके सेर नारंगी।

हलवाई : जलेबियाँ गरमागरम। ले सेब इमरती लड्डू गुलाबजामुन खुरमा बुन्दिया बरफी समोसा पेड़ा कचौड़ी दालमोट पकौड़ी घेवर गुपचुप। हलुवा ले हलुआ मोहनभोग। मोयनदार कचौड़ी कचाका[6] हलुआ नरम चभाका[7]। घी में गरक, चीनी में तरातर, चासनी में चभाचभ[8]। ले भूर का लड्डू।

———

1. बँगला देश का एक नगर।
2. नेपाल का एक कस्बा।
3. बड़ा और मीठा नीबू।
4. सन्तरा।
5. मीठी नारंगी।
6. मुलायम।
7. तर।
8. तर किया हुआ।

Scanned by CamScanner

जो खाय सो भी पछताय, जो न खाय सो भी पछताय। रेवड़ी कड़ाका। पापड़ पड़ाका। ऐसी जात हलवाई जिसके छत्तीस कौम हैं भाई। जैसे कलकत्ते के विलसन, मन्दिर के भितरिए, वैसे अन्धेर नगरी के हम। सब सामान ताजा। खाजा ले खाजा। टके सेर खाजा।

कुँजड़िन : ले धनिया मेथी-सोआ पालक चौराई बथुआ करेमू नोनियाँ कुलफा कसारी चना सरसों का साग। मरसा ले मरसा। ले बैगन लौआ कोंहड़ा आलू अरुई बण्डा नेनुआ सूरन रामतरोई मुरई। ले आदी मिरचा लहसुन पियाज टिकोरा। ले फालसा खिन्नी आम अमरूद निबुआ मटर होरहा। जैसे काजी वैसे पाजी। रैयत राजी टके सेर भाजी। ले हिन्दुस्तान का मेवा फूट और बैर।[1]

मुगल : बादाम पिस्ते अखरोट अनार बिहीदाना[2] मुनक्का किशमिश अंजीर आबजोश[3] आलूबोखारा चिलगोजा सेब नाशपाती बिही सरदा[4] अंगूर का पिटारी। आमारा ऐसा मुल्क जिसमें अंगरेज का भी दाँत कट्टा ओ गया। नाहक को रुपया खराब किया

---

1. श्लिष्ट शब्द। फल विशेष—फूट और बेर। व्यंग्यार्थ—आपसी फूट और बैर भाव।
2. अमरूद जैसे एक फल के बीज।
3. मुनक्का।
4. खरबूजे की जाति का एक श्रेष्ठ फल।

Scanned by CamScanner

बेवकूफ बना। हिन्दोस्तान का आदमी लकलक[1] हमारे यहाँ का आदमी बुंबुक बुंबुक।[2] लो सब मेवा टके सेर।

पाचकवाला : *चूरन अमलबेत[3] का भारी।*
जिसको खाते कृष्ण मुरारी।।
मेरा पाचक है पचलोना।
जिसको खाता श्याम सलोना।।
चूरन बना मसालेदार।
जिसमें खट्टे की बहार।।
मेरा चूरन जो कोई खाय।
मुझको छोड़ कहीं नहिं जाय।।
हिन्दू चूरन इसका नाम।
बिलायत पूरन इसका काम।।
चूरन जब से हिन्द में आया।
इसका धन बल सभी घटाया।।
चूरन ऐसा हट्टा-कट्टा।
कीना दाँत सभी का खट्टा[4]।।
चूरन चला दाल की मण्डी।
इसको खायेंगी सब रण्डी।।
चूरन अमले[5] सब जो खावैं।
दूनी रिश्वत तुरत पचावैं।।

---

1. दुबला-पतला।
2. बहादुर, बलवान।
3. एक खट्टा फल।
4. मुहावरा : पराजित करने के अर्थ में।
5. कचहरी के कारिन्दे।

Scanned by CamScanner

चूरन नाटकवाले खाते।
इसकी नकल पचाकर लाते॥
चूरन सभी महाजन खाते।
जिससे जमा हजम कर जाते॥
चूरन खाते लाला लोग।
जिसको अकिल अजीरन[2] रोग॥
चूरन खावैं एडिटर जात।
जिनके पेट पचै नहिं बात॥
चूरन साहेब लोग जो खाता।
सारा हिन्द हजम कर जाता॥
चूरन पूलिसवाले खाते।
सब कानून हजम कर जाते॥
ले चूरन का ढेर, बेचा टके सेर॥

मछलीवाली : मछरी ले मछरी।
मछरिया एक टके कै बिकाय।
लाख टका कै बाला[3] जोबन गाहक सब ललचाय॥
नैन–मछरिया रूप–जाल में, देखत ही फँसि जाय॥
बिनु पानी मछरी सो बिरहिया, मिलै बिना अकुलाय॥

जातवाला (ब्राह्मण) : जात लें जात, टके सेर जात। एक टका दो, हम अभी अपनी जात बेचते हैं। टके के वास्ते ब्राह्मण से धोबी हो जायँ और धोबी को ब्राह्मण कर दें, टके के वास्ते जैसी कहो वैसी व्यवस्था दें। टके के वास्ते झूठ को सच करें। टके

---

1. रिश्वत लेते कारिन्दों का अभिनय करते हैं।
2. अक्ल की अपच
3. कुँवारा।

Scanned by CamScanner

के वास्ते ब्राह्मण से मुसलमान, टके के वास्ते हिन्दू से क्रिस्तान। टके के वास्ते धर्म और प्रतिष्ठा दोनों बेचें, टके के वास्ते झूठी गवाही दें। टके के वास्ते पाप को पुण्य मानें, टके के वास्ते नीच को भी पितामह बनावें। वेद धर्म कुल-मरजादा सचाई-बड़ाई सब टके सेर। लुटाय दिया अनमोल माल। ले टके सेर।

बनिया : आटा, दाल, लकड़ी, नमक, घी, चीनी, मसाला, चावल ले टके सेर।

(बाबा जी का चेला गोबरधनदास आता है और सब बेचनेवालों की आवाज सुन-सुनकर खाने के आनन्द में बड़ा प्रसन्न होता है।)

गोबरधनदास : क्यों भाई बनिये, आटा कितने सेर?

बनिया : टके सेर।

गोबरधनदास : और चावल?

बनिया : टके सेर।

गोबरधनदास : और चीनी?

बनिया : टके सेर।

गोबरधनदास : और घी?

बनिया : टके सेर।

गोबरधनदास : सब टके सेर। सचमुच।

बनिया : हाँ महाराज, क्या झूठ बोलूँगा।

गोबरधनदास : *(कुँजड़िन के पास जाकर)* क्यों माई, भाजी क्या भाव?

कुँजड़िन : बाबा जी, टके सेर। निनुआ, मुरई, धनिया, मिरचा, साग सब टके सेर।

Scanned by CamScanner

गोबरधनदास : सब भाजी टके सेर! वाह-वाह! बड़ा आनन्द है। यहाँ सभी चीज़ टके सेर। *(हलवाई के पास जाकर)* क्यों भाई हलवाई! मिठाई कितने सेर!

हलवाई : बाबा जी! लडुआ, जलेबी, गुलाबजामुन, खाजा सब टके सरे।

गोबरधनदास : वाह! वाह!! बड़ा आनन्द है। क्यों बच्चा, मुझसे मसखरी तो नहीं करता? सचमुच सब टके सेर?

हलवाई : हाँ बाबा जी, सचमुच सब टके सेर। इस नगरी की चाल[1] ही यही है। यहाँ सब चीज टके सेर बिकती है।

गोबरधनदास : क्यों बच्चा! इस नगर का नाम क्या है?

हलवाई : अन्धेरनगरी।

गोबरधनदास : और राजा का क्या नाम है?

हलवाई : चौपट्ट राजा।

गोबरधनदास : वाह! वाह! अन्धेर नगरी चौपट्ट राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा *(यही गाता है और आनन्द से बगल बजाता है)।*

हलवाई : तो बाबा जी, कुछ लेना-देना हो तो लो-दो।

गोबरधनदास : बच्चा, भिक्षा माँगकर सात पैसे लाया हूँ, साढ़े तीन सेर मिठाई दे-दे, गुरु-चेले सब आनन्दपूर्वक इतने में छक जायेंगे।

(हलवाई मिठाई तौलता है—बाबा जी मिठाई लेकर खाते हुए और अन्धेर नगरी गाते हुए जाते हैं।)

(यवनिका गिरती है)

---

1. चलन, परम्परा।

Scanned by CamScanner

तीसरा अंक

स्थान—जंगल

(महन्त जी और नारायणदास एक ओर से 'राम भजो' इत्यादि गाते हुए आते हैं और दूसरी ओर से गोबरधनदास 'अन्धेर नगरी' गाते हुए आते हैं)

महन्त : बच्चा गोबरधनदास! कह, क्या भिक्षा लाया? गठरी तो भारी मालूम पड़ती है।

गोबरधनदास : बाबा जी महाराज! बड़े माल लाया हूँ, साढ़े तीन सेर मिठाई है।

महन्त : देखूँ बच्चा! *(मिठाई की झोली अपने सामने रखकर खोलकर देखता है)* वाह! वाह! बच्चा! इतनी मिठाई कहाँ से लाया? किस धर्मात्मा से भेंट हुई?

गोबरधनदास : गुरु जी महाराज! सात पैसे भीख में मिले थे, उसी से इतनी मिठाई मोल ली है।

महन्त : बच्चा! नारायणदास ने मुझसे कहा था कि यहाँ सब चीज टके सेर मिलती है, तो मैंने इसकी बात का विश्वास नहीं किया। बच्चा, यह कौन-सी नगरी है और इसका कौन राजा है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर ही खाजा है?

Scanned by CamScanner

गोबरधनदास : अन्धेर नगरी चौपट्ट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

महन्त : तो बच्चा! ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहाँ टके सेर भाजी और टके ही सेर खाजा हो।

दोहा

सेत सेत[1] सब एक से, जहाँ कपूर कपास।
ऐसे देस कुदेस में, कबहुँ न कीजै बास।।
कोकिला वायस[2] एक सम, पण्डित मूरख एक।
इन्द्रायन[3] दाड़िम[4] विषय, जहाँ न नेकु विवेक।।
बसिये ऐसे देस नहिं, कनक-वृष्टि[5] जो होय।
रहिये तो दुख पाइये, प्रान दीजिये रोय।।

सो बच्चा चलो यहाँ से। ऐसी अन्धेर नगरी में हजार मन मिठाई मुफ्त की मिले तो किस काम की? यहाँ एक छन नहीं रहना।

गोबरधनदास : गुरु जी, ऐसा तो संसार-भर में कोई देस ही नहीं है। दो पैसा पास में रहने ही से मजे में पेट भरता है। मैं तो इस नगरी को छोड़कर नहीं जाऊँगा। और जगह दिन-भर माँगो तो भी पेट नहीं भरता।

---

1. श्वेत (रंगवाली चीजें)
2. कौआ
3. लाल रंग का एक सुन्दर, लेकिन कड़ुआ फल।
4. अनार
5. सोने की वर्षा, अर्थात् चाहे जितना धन मिले।

Scanned by CamScanner

वरंच बाजे-बाजे[1] दिन उपास करना पड़ता है। सो मैं तो यही रहूँगा।

महन्त : देख बच्चा, पीछे पछतायेगा।

गोबरधनदास : आपकी कृपा से कोई दु:ख न होगा; मैं तो यही कहता हूँ कि आप भी यहीं रहिये।

महन्त : मैं तो इस नगरी में अब एक क्षण भर नहीं रहूँगा। देख मेरी बात मान नहीं पीछे पछतायेगा। मैं तो जाता हूँ। पर इतना कहे जाता हूँ कि कभी संकट पड़े तो हमारा स्मरण करना।

गोबरधनदास : प्रणाम गुरु जी, मैं आपका नित्य ही स्मरण करूँगा। मैं तो फिर भी कहता हूँ कि आप भी यहीं रहिये।

(महन्त जी नारायणदास के साथ जाते हैं; गोबरधनदास बैठकर मिठाई खाता है।)

(यवनिका गिरती है)

---

1. किसी-किसी

Scanned by CamScanner

चौथा अंक

स्थान—राजसभा

(राजा, मन्त्री और नौकर लोग यथास्थान स्थित हैं)

एक सेवक : *(चिल्लाकर)* पान खाइये, महाराज।

राजा : *(पीनक[1] से, चौंक के घबड़ाकर उठता है)* क्या कहा? सुपनखा आयी ए महाराज। *(भागता है)*

मन्त्री : *(राजा का हाथ पकड़कर)* नहीं-नहीं, यह कहता है कि पान खाइये महाराज।

राजा : दुष्ट, लुच्चा, पाजी। नाहक[2] हमको डरा दिया। मन्त्री, इसको सौ कोड़े लगें।

मन्त्री : महाराज! इसका क्या दोष है? न तो तमोली पान लगाकर देता, न यह पुकारता।

राजा : अच्छा, तमोली को दो सौ कोड़े लगें।

मन्त्री : पर महाराज, आप पान खाइये सुनकर थोड़े ही डरे हैं, आप तो सुपनखा के नाम से डरे हैं, सुपनखा को सजा हो।

---

1. पिनक, हल्का नशा।
2. अकारण।

Scanned by CamScanner

राजा : *(घबड़ाकर)* फिर वही नाम? मन्त्री तुम बड़े खराब आदमी हो। हम रानी से कह देंगे कि मन्त्री बेर-बेर[1] तुमको सौत बुलाने चाहता है। नौकर! नौकर! शराब—

दूसरा नौकर : (एक सुराही में से एक गिलास में शराब उलझ कर देता है।) लीजिये महाराज। पीजिये महाराज।

राजा : *(मुँह बना-बनाकर पीता है)* और दे।

(नेपथ्य में— 'दुहाई है दुहाई' का शब्द होता है।)

कौन चिल्लाता है—पकड़ लाओ।

(दो नौकर एक फरियादी को पकड़ लाते हैं)

फरियादी : दोहाई है महाराज दोहाई है। हमारा न्याव होय।

राजा : चुप रहो। तुम्हारा न्याव यहाँ ऐसा होगा कि जैसा जम[2] के यहाँ भी न होगा—बोलो क्या हुआ?

फरियादी : महाराज! कल्लू बनिया की दीवार गिर पड़ी सो मेरी बकरी उसके नीचे दब गयी। दोहाई है महाराज, न्याव हो।

राजा : *(नौकर से)* कल्लू बनिये की दीवार को अभी पकड़ लाओ।

मन्त्री : महाराज, दीवार नहीं लायी जा सकती।

---

1. बार-बार।
2. यमराज।

Scanned by CamScanner

राजा : अच्छा, उसका भाई, लड़का, दोस्त, आशना[1] जो हो उसको पकड़ लाओ।

मन्त्री : महाराज! दीवार ईंट-चूने की होती है, उसको भाई-बेटा नहीं होता।

राजा : अच्छा, कल्लू बनिये को पकड़ लाओ। *(नौकर लोग दौड़कर बाहर से बनिये को पकड़ लाते हैं)* क्यों बे बनिये! इसकी लरकी, नहीं बरकी, क्यों दबकर मर गयी?

मन्त्री : बरकी नहीं महाराज, बकरी।

राजा : हाँ-हाँ, बकरी क्यों मर गयी—बोल, नहीं अभी फाँसी देता हूँ।

कल्लू : महाराज! मेरा कुछ दोष नहीं। कारीगर ने ऐसी दीवार बनायी कि गिर पड़ी।

राजा : अच्छा, इस मल्लू को छोड़ दो, कारीगर को पकड़ लाओ। *(कल्लू जाता है, लोग कारीगर को पकड़कर लाते हैं)* क्यों बे कारीगर! इसकी बकरी किस तरह मर गयी?

कारीगर : महाराज, मेरा कुछ कसूर नहीं, चूनेवाले ने ऐसा बोदा[2] चूना बनाया कि दीवार गिर पड़ी।

राजा : अच्छा, इस कारीगर को बुलाओ, नहीं-नहीं निकालो, उस चूनेवाले को बुलाओ। *(कारीगर निकाला जाता है, चूनेवाला पकड़कर लाया जाता है)* क्यों बे खैर-सोपाड़ी-चूनेवाले! इसकी कुबरी कैसे मर गयी?

---

1. परिचित या सम्बन्धी
2. घटिया, बेजान।

Scanned by CamScanner

चूनेवाला : महाराज! मेरा कुछ दोष नहीं, भिश्ती ने चूने में पानी ढेर दे दिया, इसी से चूना कमजोर हो गया होगा।

राजा : अच्छा, चुन्नीलाल को निकालो, भिश्ती को पकड़ो। *(चूनेवाला निकाला जाता है, भिश्ती लाया जाता है)* क्यों बे भिश्ती! गंगा- जमुना की किश्ती! इतना पानी क्यों दिया कि इसकी बकरी गिर पड़ी और दीवार दब गयी।

भिश्ती : महाराज! गुलाम का कोई कसूर नहीं, कसाई ने मसक इतनी बड़ी बनायी कि उसमें पानी जादे आ गया।

राजा : अच्छा, कसाई को लाओ, भिश्ती निकालो। *(लोग-भिश्ती को निकालते हैं, कसाई को लाते हैं)*

क्यों बे कसाई, मशक ऐसी क्यों बनायी कि दीवार लगायी बकरी दबायी?

कसाई : महाराज! गड़ेरिया[1] ने टके पर ऐसी बड़ी भेड़ मेरे हाथ बेची कि उसकी मशक बड़ी बन गयी।

राजा : अच्छा कसाई को निकालो, गड़ेरिये को लाओ। *(कसाई निकाला जाता है, गड़ेरिया आता है)* क्यों बे ऊख पौंड़े के गड़ेरिये[1] ऐसी बड़ी भेड़ क्यों बेचा कि बकरी मर गयी?

गड़ेरिया : महाराज! उधर से कोतवाल साहब की सवारी आ गयी, सो उसके देखने में मैंने छोटी-बड़ी भेड़ का ख्याल नहीं किया, मेरा कुछ कसूर नहीं।

---

1. गड़ेरिया एक जाति। यहाँ व्यंग्यार्थ—मोटा गड़ेरिया।

Scanned by CamScanner

राजा : अच्छा, इसको निकालो, कोतवाल को अभी सरबमुहर[1] पकड़ लाओ।
(गड़ेरिया निकाला जाता है, कोतवाल पकड़कर आता है) क्यों बे कोतवाल! तैंने सवारी ऐसी धूम से क्यों निकाली कि गड़ेरिये ने घबड़ाकर बड़ी भेड़ बेची, जिससे बकरी गिरकर कल्लू बनिया दब गया?

कोतवाल : महाराज महाराज! मैंने तो कोई कसूर नहीं किया, मैं तो शहर के इन्तजाम के वास्ते जाता था।

मन्त्री : *(आप ही आप)* यह तो बड़ा गजब हुआ, ऐसा न हो कि यह बेवकूफ इस बात पर सारे नगर को फूँक दे या फाँसी दे दे। *(कोतवाल से)* यह नहीं, तुमने ऐसे धूम से सवारी क्यों निकाला?

राजा : हाँ-हाँ, यह नहीं, तुमने ऐसे धूम से सवारी क्यों निकाला कि उसकी बकरी दबी?

कोतवाल : महाराज महाराज—

राजा : कुछ नहीं, महाराज महाराज, ले जाओ, कोतवाल को अभी फाँसी दो। दरबार बरखास्त।

(लोग एक तरफ कोतवाल को पकड़कर ले जाते हैं, दूसरी ओर से मन्त्री को पकड़कर राजा जाते हैं)

(यवनिका गिरती है)

---

1. तुरन्त।

Scanned by CamScanner

पाँचवाँ अंक

स्थान—अरण्य

(गोबरधनदास गाते हुए आते हैं)

(राग काफी)

अन्धेर नगरी अनबूझ राजा।
टका सेर भाजी टका सेर खाजा।।
नीच ऊँच सब एकहि ऐसे।
जैसे भँड़ुए पण्डित तैसे।।
कुल-मरजाद न मान बड़ाई।
सबै एक से लोग-लुगाई।।
जात-पाँत पूछै नहिं कोई।
हरि को भजै सो हरि को होई।।
बेश्या जोरू एक समाना।
बकरी गऊ एक करि जाना।।
साँचे मारे मारे डोलैं।
छली दुष्ट सिर चढ़ि चढ़ि बोलैं।।
प्रगट सभ्य अन्तर छलधारी।
सोई राजसभा बल भारी।।
साँच कहैं ते पनही[1] खावैं।
झूठे बहु बिधि पदवी पावैं।।

---

1. जूता।

Scanned by CamScanner

छलियन के एका के आगे।
लाख कहौ एकहु नहिं लागे।।
भीतर होइ मलिन[1] की कारो।
चहिए बाहर रंग चटकारो।।
धर्म अधर्म एक दरसाई।
राजा करे सो न्याव सदाई।।
भीतर स्वाहा बाहर सादे[2]।
राज करहिं अमले अरु प्यादे।।
अन्धाधुन्ध मच्यौ सब देसा।
मानहुँ राजा रहत विदेसा।।
गो द्विज श्रुति आदर नहिं होई।
मानहुँ नृपति विधर्मी कोई।।
ऊँच नीच सब एकहिं सारा।
मानहुँ ब्रह्म-ज्ञान बिस्तारा[3]।।
अन्धेर नगरी अनबूझ राजा।
टका सेर भाजी टका सेर खाजा।।

(बैठकर मिठाई खाता है)

—गुरु जी ने हमको नाहक यहाँ रहने को मना किया था। माना कि देस बहुत बुरा है, पर अपना क्या? अपने किसी राजकाज में थोड़े हैं कि कुछ डर है, रोज मिठाई चाभना[4], मजे में आनन्द से राम-भजन करना।

---

1. मैला।
2. भीतर से काले, ऊपर से निर्मूल। धूर्त कपटी।
3. जैसे ब्रह्म-ज्ञानी हों, जो ऊँच-नीच को, समान भाव से देखते हैं। (व्यंग्य भाव है।)
4. छककर खाना।

Scanned by CamScanner

(मिठाई खाता है। चार प्यादे चार ओर से आकर उसे पकड़ लेते हैं)

पहला प्यादा : चल बे चल, बहुत मिठाई खाकर मुटाया है। आज पूरी हो गयी।

दूसरा प्यादा : बाबा जी चलिये, नमोनारायन कीजिये।

गोबरधनदास : *(घबड़ाकर)* हैं! यह आफत कहाँ से आयी! अरे भाई, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो मुझको पकड़ते हो?

पहला प्यादा : आपने बिगाड़ा है या बनाया है इससे क्या मतलब, अब चलिये। फाँसी चढ़िये।

गोबरधनदास : फाँसी। अरे बाप रे बाप फाँसी!! मैंने किसकी जमा[1] लूटी है कि मुझको फाँसी! मैंने किसके प्राण मारे कि मुझको फाँसी!

दूसरा प्यादा : आप बड़े मोटे हैं, इस वास्ते फाँसी होती है।

गोबरधनदास : मोटे होने से फाँसी? यह कहाँ का न्याय है! अरे, हँसी फकीरों से नहीं करनी होती।

पहला प्यादा : जब सूली चढ़ लीजियेगा तब मालूम होगा कि हँसी है कि सच। सीधी राह से चलते हो कि घसीटकर ले चलें?

गोबरधनदास : अरे बाबा, क्यों बेकसूर का प्राण मारते हो? भगवान् के यहाँ क्या जवाब दोगे?

पहला प्यादा : भगवान् को जवाब राजा देगा। हमको क्या मतलब। हम तो हुक्मी बन्दे[2] हैं।

गोबरधनदास : तब भी बाबा बात क्या है कि हम फकीर आदमी को नाहक फाँसी देते हो?

---

1. कोष, खजाना।
2. हुक्म बजानेवाले।

Scanned by CamScanner

पहला प्यादा : बात यह है कि कल कोतवाल को फाँसी का हुक्म हुआ था। जब फाँसी देने को उसको ले गये, तो फाँसी का फन्दा बड़ा हुआ, क्योंकि कोतवाल साहब दुबले हैं। हम लोगों ने महाराज से अर्ज किया, इस पर हुक्म हुआ कि एक मोटा आदमी पकड़कर फाँसी दे दो, क्योंकि बकरी मारने के अपराध में किसी-न-किसी को सजा होनी जरूर है, नहीं तो न्याव न होगा। इसी वास्ते तुमको ले जाते हैं कि कोतवाल के बदले तुमको फाँसी दें।

गोबरधनदास : तो क्या और कोई मोटा आदमी इस नगर भर में नहीं मिलता जो मुझ अनाथ फकीर को फाँसी देते हैं!

पहला प्यादा : इसमें दो बात है एक तो नगर भर में राजा के न्याव के डर से कोई मुटाता ही नहीं, दूसरे और किसी को पकड़े तो वह न-जाने क्या बात बनावे कि हमीं लोगों के सिर कहीं न घहराय[1] और फिर इस राज में साधू महात्मा इन्हीं लोगों की तो दुर्दशा है, इससे तुम्हीं को फाँसी देंगे।

गोबरधनदास : दुहाई परमेश्वर की, अरे मैं नाहक मारा जाता हूँ! अरे यहाँ बड़ा ही अन्धेर है, अरे गुरु जी महाराज का कहा मैंने न माना उसका फल मुझको भोगना पड़ा। गुरु जी कहाँ हो! आओ, मेरे प्राण बचाओ, अरे मैं बेअपराध मारा जाता हूँ गुरु जी गुरु जी—

(गोबरधनदास चिल्लाता है, प्यादे उसको पकड़कर ले जाते हैं)

[यवनिका गिरती है]

---

1. सिर न आ पड़े।

Scanned by CamScanner

छठा अंक

स्थान—श्मशान

(गोबरधनदास को पकड़े हुए चार सिपाहियों का प्रवेश)

गोबरधनदास : हाय बाप रे! मुझे बेकसूर ही फाँसी देते हैं। अरे भाइयों, कुछ तो धरम विचारो! अरे मुझ गरीब को फाँसी देकर तुम लोगों को क्या लाभ होगा? अरे मुझे छोड़ दो। हाय! हाय! *(रोता है और छुड़ाने का यत्न करता है)*

पहला सिपाही : अबे, चुप रह—राजा का हुक्म भला कहीं टल सकता है? यह तेरा आखिरी दम है, राम का नाम ले—बेफाइदा क्यों शोर करता है? चुप रह—

गोबरधनदास : हाय! मैंने गुरु जी का कहना न माना, उसी का यह फल है। गुरु जी ने कहा था कि ऐसे नगर में न रहना चाहिए, यह मैंने न सुना! अरे! इस नगर का नाम ही अन्धेर नगरी और राजा का नाम चौपट्ट है, तब बचने की कौन आशा है। अरे! इस नगरी में ऐसा कोई धर्मात्मा नहीं है जो इस फकीर को बचावे। गुरु जी कहाँ हो? बचाओ-बचाओ-गुरुजी-गुरुजी—

(रोता है, सिपाही लोग उसे घसीटते हुए ले चलते हैं। गुरु जी और नारायणदास आते हैं)

गुरु : अरे बच्चा गोबरधनदास! तेरी यह क्या दशा है?

Scanned by CamScanner

गोबरधनदास : *(गुरु को हाथ जोड़कर)* गुरु जी! दीवार के नीचे बकरी दब गयी, सो इसके लिए मुझे फाँसी देते हैं, गुरु जी बचाओ।

गुरु : अरे बच्चा! मैंने तो पहिले ही कहा था कि ऐसे नगर मे रहना ठीक नहीं; तैंने मेरा कहना नहीं सुना।

गोबरधनदास : मैंने आपका कहा नहीं माना, उसी का फल मिला। आपके सिवा अब ऐसा कोई नहीं है जो रक्षा करे। आप ही का हूँ, आपके सिवा और कोई नहीं *(पैर पकड़कर रोता है)*।

गुरु : कोई चिन्ता नहीं, नारायण सब समर्थ हैं। *(भौं चढ़ाकर सिपाहियों से)* सुनो, मुझको अपने शिष्य को अन्तिम उपदेश देने दो, तुम लोग तनिक किनारे हो जाओ, देखो मेरा कहना न मानोगे तो तुम्हारा भला न होगा।

सिपाही : नहीं महाराज, हम लोग हट जाते हैं। आप बेशक उपदेश कीजिये।

(सिपाही हट जाते हैं। गुरु जी चेले के कान में कुछ समझाते हैं)

गोबरधनदास : *(प्रकट)* तब तो गुरु जी हम फाँसी चढ़ेंगे।

गुरु : नहीं बच्चा, मुझको चढ़ने दे।

गोबरधनदास : नहीं गुरु जी, हम फाँसी पड़ेंगे।

गुरु : नहीं बच्चा हम। इतना समझाया नहीं मानता, हम बूढ़े भये, हमको जाने दे।

गोबरधनदास : स्वर्ग जाने में बूढ़ा जवान क्या? आप तो सिद्ध हो, आपको गति-अगति से क्या? मैं फाँसी चढ़ूँगा।

(इसी प्रकार दोनों हुज्जत करते हैं। सिपाही लोग परस्पर चकित होते हैं)

Scanned by CamScanner

पहला सिपाही : भाई! यह क्या माजरा है, कुछ समझ नहीं पड़ता।

दूसरा सिपाही : हम भी नहीं समझ सकते कि यह कैसा गबड़ा[1] है। *(राजा, मन्त्री कोतवाल आते हैं)*

राजा : यह क्या गोलमाल है?

पहला सिपाही : महाराज! चेला कहता है मैं फाँसी पड़ूँगा, गुरु कहता है, मैं पड़ूँगा; मालूम नहीं पड़ता कि क्या बात है?

राजा : *(गुरु से)* बाबा जी! बोलो काहे को आप फाँसी चढ़ते हैं?

गुरु : राजा! इस समय ऐसी साइत है कि जो मरेगा, सीधा बैकुण्ठ जायेगा।

मन्त्री : तब तो हमीं फाँसी चढ़ेंगे।

गोबरधनदास : हम हम। हमको तो हुकुम है।

कोतवाल : हम लटकेंगे। हमारे सबब तो दीवार गिरी।

राजा : चुप रहो, सब लोग। राजा के आछत[2] और कौन बैकुण्ठ जा सकता है, हमको फाँसी चढ़ाओ, जल्दी–जल्दी।

गुरु : जहाँ न धर्म न बुद्धि नहिं, नीति न सुजन समाज।
ते ऐसहि आपुहि[3] नसैं, जैसे चौपट राज।।

[राजा को लोग टिकठी[4] पर खड़ा करते हैं]

[पटाक्षेप]

---

1. धुन्ध। (यहाँ आशय अस्पष्ट बात से है)।
2. जीवित रहते।
3. अपने आप, स्वयं।
4. फाँसी के लिए लगाया गया तख्ता।

Scanned by CamScanner

अंधेर नगरी

यह नाटक इस अर्थ से समकालीन नाटक है कि यह किसी भी समय के अन्याय, अनाचार, भ्रष्टाचार, विवेक-शून्यता और मनमानेपन पर रोशनी डालता है। इस प्रहसन में व्यंग्य के माध्यम से जो कुछ भी कहा गया है, उतना ही अधिक कहने की गुंजाइश भी है। रंगकर्मी और कुशल निर्देशक इस नाटक में बहुत कुछ समावेश कर सकने की क्षमता का इस्तेमाल करके अपने समय की समस्याओं को रेखांकित करते हुए उसका उत्तर खोज सकते हैं।

- सत्यप्रकाश मिश्र

लोकभारती प्रकाशन
इलाहाबाद नयी दिल्ली पटना

Scanned by CamScanner